Research Paper Literature

नारी विमर्ष . एक परिचय
(Naree Vimarsh - Ek Parichay)

Indu | Pro. Hindi Vibhag, G. M. N. (P. J.) Collage, Ambala, Hariyana

KEYWORDS

नारी विमर्ष आधुनिक युग की एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है। यह विचारधारा एक आन्दोलन है। जब कोई आंदोलन षुरू किया जाता है तो वह अपने साथ एक क्रांति को लेकर आता है। क्रान्ति रक्त युक्त हो ये स्वाभाविक है। परन्तु जब हम इस क्रान्ति तथा आंदोलन को नारी के साथ जोड़कर देखते हैं तो यह रक्तयुक्त क्रान्ति ना होकर मानवीय संवेदना को समानता देने वाली एक सषक्त लहर बन कर सामने आती है। क्योंकि नारी जब स्वयं ही कुदरत की बनाई एक अद्भूत अनुभूति है तो भला उसके हक के लिए चलाया कोई आन्दोलन खून खराबों और लूट–पाट से युक्त कैसे हो सकता है? इस प्रकार इस आंदा. लन को यदि नारी विमर्ष कहा जाएं तो कहना अनुचित न होगा।

नारी विमर्ष नारी में चेतना, जागृति को जगाने का द्योतक है जो पुरुश प्रधान समाज में नारी पर होने वाले अत्याचार, दमन, षोशण का विरोध करता है। नारी आज समाज में रहकर उन परिस्थितियों से टकराना चाहती है जो उसे अतीत से दबाती आ रही है। अब नारी अपने अस्तित्व एवं अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी है, उसे अपनी सुरक्षा का भय सताने लगा है। जिसके परिणाम स्वरूप वह किसी भी परिस्थिति में अपनी अस्मिता से समझौता नहीं करना चाहती।

आधुनिक युग की षिक्षित व जागरूक नारी समाज के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। वह प्राचीन काल से चली आ रही रूग्ण रूढियों को त्यागकर आगे बढ रही है तथा सदियों की अपनी चुप्पी को अभिव्यक्ति दे रही है, अपने दुखों, कश्टों, षोशण, लिंगभेद को व्यक्त कर रही है। नारी परम्परागत चली आ रही पितृसत्तात्मक समाज के नियमों को तोड़कर आगे बढ रही हैं। जहां पूर्ववर्ती नारी विमर्ष में नारी का समाज परम्परा रूढियों के विरूद्ध था, वही वर्तमान में नारी पुरुश के प्रतिपक्ष में आ रही है, इसके अन्तर्गत वह पितृक सत्ताओं पर कुंठाघात कर अपने लिए एक नई जमीन निर्मित कर रही है जिससे वह अपने अधिकारों के लिए जुझ रही है। आज लिंग–वि. हीन भाशा का प्रष्न भी उसके षोशण का एक बहुत बड़ा कारण है।

अतः नारी मुक्ति का यह संघर्श जितना अधिक बाह्य स्तर पर घनीभूत हुआ है, उतना ही यह आन्तरिक स्तर पर भी। समग्रतः नारी–विमर्ष स्त्री के आत्मबोध, आत्मविष्लेशण और आत्माभिव्यक्ति का संघर्श है। इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को पाष्चात्य जगत ने पूरी तरह प्रभावित किया है। नारी को एक नई सोच प्रदान की है नारी विमर्ष को नए आयाम एवं दृश्टि दी है । इस स्तर पर भारतीय एवं पाष्चात्य परिवेष से रूबरू होकर लेखिकाओं ने नारी मन की अटल गहराईयों को महसूस कर उसे वाणी दी है। नारी मन की सूक्ष्म व जटिल परतों को उघाड़ने का प्रयास किया है क्योंकि चीजें बाहरी तौर पर जितनी सामान्य दिखती है, आन्तरिक रूप में वे उतनी ही असहज दिखाई पडती हैं। मन व षरीर से पीडित नारी की आवाज को मुखरित करने का कार्य साहित्य जगत में रचनाकारों ने बहुत विस्तारपूर्वक किया।

विमर्ष:
हिन्दी षब्दकोषों के आधार पर विमर्ष का अर्थ – समालोचन, परामर्ष, परीक्षण, किसी बात पर सोच–विचार, चिन्तन व मनन से है। जब दो या दो से अधिक लोग मिलकर किसी विशय पर सोच–विचार, बहस करते हैं तो चिन्तन की यह प्रक्रिया 'विमर्ष' बन जाती है।

इस आधार पर मैं कहना चाहूंगी– 'विमर्ष' किसी विशय पर जब विभिन्न विद्वानों या लोगों द्वारा जो अलग–अलग विशयों के ज्ञानी हैं, के तर्क–वितर्क करने पर उस विशय के पक्ष–विपक्ष में जो सार्थक विचार प्रस्तुत किए जाते हैं; जिससे वह विशय व्यक्तिगत न होकर सार्वजनिक एवं बहुआयामी बन जाता है, चिन्तन व मनन की यह प्रक्रिया ही 'विमर्ष' कहलाती है।

नारी विमर्ष:
जब विमर्ष का विशय नारी हो तो यह विमर्ष 'नारी–विमर्ष' कहलाता है। 20वीं सदी के मुक्ति संघर्श में नारी का मुक्ति–संघर्श सबसे अधिक सार्वभौमिक व मूलगामी रहा है। इसकी षुरूआत पष्चिम से हुई। अमेरिका, ब्रिटेन जापान, चीन इत्यादि देषों ने सबसे पहले नारी के हक की बात सामने रखी। उसके स्वतंत्रता एवं अधिकारों के विशयों पर आवाज बुलंद की । जिसका प्रभाव बाद में हमारे देष पर भी पडा और इस तरह नारी से जुडी समस्याओं पर हमारे साहित्यकारों का भी ध्यान जाने लगा । दर्षन, मनोविज्ञान, राजनीति, इतिहास, समाज–विज्ञान इत्यादि जैसी अनेक विधाओं में यह संघर्श केन्द्र का विशय रहा और नारी के मुक्ति संघर्श का एक समृद्ध षास्त्र विकसित हुआ। इसी को संयुक्त रूप से नारी विमर्ष कहा जाता है।

राकेष कुमार ने नारी–विमर्ष के बारे में कहा है –
''स्त्री विमर्ष बहुआयामी है, स्त्री विमर्ष ने समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति, सा. हत्य, आलोचना, काव्य–षास्त्र की दुनिया में एक नई बहस को जन्म दिया है कि स्त्री दृश्टि का नया परिप्रेक्ष्य क्या है? वह पुरुश दृश्टि से पृथक कैसे है?''1

'महात्मा गांधी जी' भारत के ऐसे पहले नेता थे जिन्होंने सर्वप्रथम नारी–विमर्ष पर कहा था – ''मैं उस भारत (देष) के निर्माण के लिए काम करूंगा। जिसमें महिलाओं को पुरुशों के समान अधिकार प्राप्त होंगे।''2

सीमोन द बोउवार ने 'जेम ैमबवदक ैमग' नामक पुस्तक लिखकर नारी को सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या यही 'नारी' है? उनका कहना है कि 'नारी पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है।'3

पाष्चात्य जगत में 'सीमोन द बोउवार', 'केट मिलट', 'इरीगैरे' आदि ने स्त्री–विमर्ष' के प्रष्न को उठाकर विष्व चिंतन में एक नई लहर को जन्म दिया है।

'नासिरा षर्मा', 'नारी विमर्ष' के विशय में अपने मत को प्रस्तुत करती हुई कहती है – ''पिछली 50 वर्शो में जितना अधिक विचार विमर्ष स्त्री समाज को लेकर हुआ है, उतना पुरुश समाज' को लेकर नही।''4

हिन्दी साहित्य जगत में महिला कथाकारों में सर्वप्रथम बंग महिला, राजेन्द्र बाला घोश ने अपनी मौलिक कहानी 'दुलाईवाली' में नारी के प्रति अपने उदात्त विचारों को प्रस्तुत किया है। इसके पष्चात हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महिला कथाकारों की एक दीर्घ परम्परा आरम्भ हुई, जिसमें उशा देवी मिश्रा, 'कंचन लता सब्बरवाल', षषी प्रभाषास्त्री, इन्द्रबाली, मेहरून्निसा परवेज, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुश्पा, मालती जोषी, सुनीता जैन, दीप्ति खण्डेलवाल, गीतांजलि श्री, नासिरा षर्मा, प्रभा खेतान, मृणाल पाण्डे आदि का नाम उल्लेखनीय है।

बंग महिला से लेकर वर्तमान समय तक की एक दीर्घ अवधि को पूरा करता हुआ कथा साहित्य नारी के जीवन के विविध आयामों को मुखरित करता हुआ प्रतीत होता है।

जिसमें नारी से जुड़ी सभी समस्याओं को उठाया गया है वे समस्याएं धार्मिक, सामा. जिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से सम्बधित है। नारी का षोशण खुले आम मीडिया, विज्ञापनों एवं चैनलों की दुनिया में किया जा रहा है। जिसके उसका न केवल दैहिक अपितु मानसिक एवं आर्थिक षोशण भी हो रहा है। इस षोशण से नारी तभी मुक्ति पा सकती है जब वह स्वयं अपने हक के लिए संघर्शषील होगी। कहने का तात्पर्य है कि पुरूआत उसे स्वयं करनी होगी क्योंकि ये उसकी स्वयं के हक की लडाई है। अपने हक एवं अधिकारों के लिए उसे सषक्तषील होना ही पड़ेगा।

अंतः मैं मजाज लखनवी नज्म की पंक्तियां कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगी – ''तेरे माथे पे ये आंचल बहुत ही खुब है, लेकिन, जो इस आंचल को तू परचम बना लेती तो और भी खूब था।''5

REFERENCES

1. कुमार राकेष, लेख; 'स्त्रीत्व विमर्ष क्यों? नारीवादी विमर्ष, पंचकूला, आधार प्रकाषन, 2004 पृ. 10 द्य 2. उशा महाजन – 'उठो अन्नपूर्ण साथ चलें' (बदलते दाम्पत्य संबंध), हिमाचल पुस्तक भण्डार, सरस्वती भण्डार, गांधीनगर, दिल्ली । द्य 3. खेतान, प्रभा – उपनिवेष में स्त्री (मुक्ति कामना की) नई दिल्ली, राजकमल प्रकाषन, 2003 द्य 4. षर्मा, नासिराः औरत के लिए औरत' नई दिल्ली, सामयिक प्रकाषन, 2003, पृ. 112 द्य 5. वर्मा, कल्पनाः स्त्री विमर्ष विविध पहलू, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद द्य षब्दकोषः द्य 1. दास, ष्याम सुंदर – हिन्दी षब्दसागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काषी (1930) द्य 2. बाहरी, डॉ. हरदेव – षिक्षक हिन्दी षब्दकोष, रवीन्द्र प्रेस, दिल्ली, 1994 द्य 3. वर्मा, डॉ. धीरेन्द्र – हिन्दी साहित्य कोष, बनारस, लि., संस्करण – 2005, दि.। द्य